

DPN 5565

Title: जरमगीता स्तोत्र / JARAM GITĀ STOTRA

Run. No. 6256

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र / Hymn

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / ^{नेपालभाषा अनुवाद} Newa translation

Size in cms. 22.5 x 10.5 Folios 5 Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 945

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

१. ॐ नमो नारायणाय ॥ ॥ वैष्णव उवाच ॥ ॥
दुतो गच्छति मूलोद्वे वैष्णवानां पौरुषम्
अवैष्णवानां गृहिण्य च आनीयन्त -
P.T.O. ↓ कार्य (कालम्) ॥

श्रीश्री जरमगीता स्तोत्रं समाप्तं ॥ ॥ सम्वत् १९५५ मिति नव
श्रावण वीर ८ रोज १ हुकं ॥

जमलाजन दुल पानि हाते. ओ दुल पानि दपनि मूलु मल्ल ओडाओ मनुष्य पानि कालहुनि
वैष्णव युक्क हम मने ओ वैष्णव युक्क हमार नकस लय हिओ धायाओ दुलन धाली॥१॥

20

15

10

5

0

cm.

5

10

15

20

25

30



ॐ नमो नारायणाय ॥ वेवस्वत उवाच ॥ इति गच्छति हस्तोक्तं वेदवा नां पतितम् ॥
 अवेदवा नां गृहिणां च आनीय न न कानयं ॥ ॥ गमना जान इति पतितान् शोभत प
 तितं पतितं मृत्युमनुल अदा अमनुष्यपति काल इति वेदवा वशं कुरुय मग अवेदवा
 शक दया अ न न कस्तनय हि अ धाया अ इति न धातं ॥ १ ॥ इति उवाच ॥ किं नृपं वेदवा
 नां च अवेदवा नां कथं च न ॥ तत्सर्वं एषा तु मित्रा मित्रं न कृदिविवस्वत ॥ ॥ तामहा
 नाग वेदवा वन नृष्य गर्थिद अवेदवा वन गर्थिद क्रिपनि स न म सिया कृत पा ल स्य न
 क न मात ॥ २ ॥ वेवस्वत उवाच ॥ पतिव्रता गुरु स सत्यवादी सदान न ॥ अतिथ
 पूजनं रक्षा दृष्टा च कृ न मी न यत् ॥ ॥ पतिव्रता मिता इ अयत् सत्यवादि ज्ञाय

अर्चोद अतिथः अया गत पूजाया कथं विद मनुष्यपति कृमि स्य न सायं मग ॥
 ॥ ३ ॥ कपिला पालय धनं एष मयं गुरु मार्जनं ॥ पूजनं लिखिगं दव दृष्टा च कृ न
 मित यत् ॥ ॥ स न नं सियी अ सा ल हि का अ त ल नं सा स खि न व धि ला अ त ल नं
 क स द अ धा या अ त न न स द नं द अ पूजा या य हा अ थ विद अ यत् कृ प नी स्य
 न स्वयं मग ॥ ४ ॥ दानवती गणु की च गिला अ अर्चयं सदा ॥ ॥ का कि क्रियत जायं
 दृष्टा च कृ न मी न यत् ॥ ॥ दानवतिया गणु किया ल ह या सा नि ग्राम पूजा व कृ न
 या त ह नं या का त वा दा अ गा प या त अ कृ कृ प नि स्य न स्वयं मग ॥ ५ ॥ गीत वा या तु
 कृ क्रा य तु ल सि मा ल तु ष र्ग ॥ गीत व कृ कृ त द ह दृष्टा च कृ न मि न यत् ॥ ॥

॥ सुनानं श्री कृष्ण या रुडि म हा ला व खिं था गी नी अ ह नं उ र गी ना ल न क षा या
 अ थानं ह नं दानि का या विं क द यि अ अ क क मि स्य न मि खान स्व यं म न ॥ ३ ॥ अग्नि
 हा र ग वा नं रं वं दा स्या स प ना य नं ॥ ह का नं व द न सं ध्या द द्या च क न मी ल य न् ॥
 अग्नि हा उ या क वा म ग ह नं ग धू ल न क अ क ह नं वं द वा म ग ह स न्ध्या या क वा म
 क प नि स्य न स्व यं म न अ ॥ १ ॥ म क क अ र्थ ग य मु उ ल सि ह दि न स्य ना ॥ ग वि
 द गाय न नि हं द द्या च क न मि न य न् ॥ ॥ वि षु रु कि र अ क उ ल मि ना लान का
 षा या अ र अ क ग वि द ध्या अ ल पा गे स प र क मि स न स्व यं म न ॥ ८ ॥ क व ना क
 म नू स ख गी गा ग क उ मा क न ॥ प य ना म स र म ग द द्या च क न मि ल य न् ॥ ॥

क व ना क म वि स न न नू म द गी गा ग क उ मा क प न प र क क प स्व न स्व यं म न ॥ २ ॥
 ॥ य उ क्ता नं व ध मी सा उ ल गी का न र्ण य था ॥ अ ह का या स मा स य द द्या च क न मि न
 य न् ॥ ॥ ग न ध र्मा सा द न ह नं उ ल सि ना या अ व न मा या क स क प नी स्य न मि ख
 न स्व यं म न ॥ १० ॥ नू डा क थ व र्ण व ध्या क र्ण व म क क क न ॥ क ग वं मि व ध्या त्वा च
 द द्या च क न मि न य न् ॥ ॥ नू डा क या म हि मा द द क नू डा क ग न प र स मा ल स
 ना हा त स त अ क ह चं ना ना य ध म हा द अ ध्या न या क क क मि स न स्व यं म न ॥ ११ ॥
 ॥ इ त उ वा च ॥ अ त प नं प्र व क्ष्या मि ध र्म ना क न वि क र्णं ॥ अ वं क वा अ ना च नी
 गी पुं च क थि रं पु री ॥ ॥ श ध र्म ना क ह चं म व ना द न वि क्ता न ध क ण वि ष्या क

धुव काय

नञ्वेकवञ्जनावानीयाखकदशप्रउकलपातस्यन॥१२॥ वेवस्वतउवाच॥
 ॥ पापिकुश्रयगांइमाविख्यातापापकर्मना॥ अन्तावासायानिश्चिन्नीयंननका
 नयं॥ ॥ शङ्कपापकर्मयाखकदशप्रउकलपातस्यन॥ अन्तावासायानिश्चिन्नीयंननका
 नीहयाअननकसक्त्या॥१३॥ गारुत्याविप्रहत्याचक्षीहत्यावाल्पागक॥ प
 शुनांघातकश्चेवञ्जनीयंननकालयं॥ ॥ गारुत्याः वृक्षहत्याक्षीहत्यावाल्पा
 त्यालाहृक्षपशुस्याकक्षधपनीहयाअननकसक्त्या॥१४॥ अश्वकृच्छ्रं
 वेवक्षप्रिनश्वधकृदनं॥ साकवनंसुगन्धंवाञ्जनीयंननकानयं॥ ॥ अल
 गतसिमाञ्जनसिमाधरुक्षसूर्यस्याकक्षवाक्चनमिसास्याकक्षधपनिहया

श्री

अननकसक्त्या॥१५॥ कन्योविक्रीः हयविक्रीः गविक्रीः सविक्रिय॥ मानवावा
 चविक्रीचञ्जनीयंननकानयं॥ ॥ अश्वमिमांससलमिमांससामिमांसस
 मिमांससमन्त्रमिमांसधपनीहयाअननकसक्त्या॥१६॥ पनडयंपनडोत्तवि
 ख्यातापापकर्मना॥ नीवासावासायानिश्चिन्नीयंननकानयं॥ ॥ पनयाडवस
 पनडोत्तकलाहिकः काजातआसद्यातकयाकक्षधपनीहयाअननकसक्त्या
 ॥१७॥ मातापितापत्नीत्यागीहृष्टीश्रातासहादन॥ हिनकारीपत्नीत्याञ्जनीयं
 ननकालयं॥ ॥ मामवददाकिजातकक्षहृद्यागननतअश्वयथाधिथहि
 तक्षत्यागयाकक्षधपनीहयाअननकसक्त्या॥१८॥ अमान्यंवदगाजाति
 अमान्यंसर्वतिथिक॥ अमान्यंवाक्चनमिमांससविक्रियञ्जनीयंननकानयं॥ ॥ वदगाकुम्भ

नयाककृतिर्थावाकन सा धाम अमानयाककृत्पनीहया अननकसतयहिता ॥ १२ ॥ पु
 वनक्तिवेकवानां विवादं कुत्र गयथा ॥ गपि वृथा प्रकुर्वन्ति आनीयं न न कालयं ॥ विप्र
 रक्तिमशुभाक विवादयाककृत्पनीहया अननकसतयहिता ॥ १३ ॥ पु
 अ ॥ २० ॥ स्वयंदरु स्वयंदरु यथुक्तः हनिवास्तन ॥ पर्वनिमेषूनं कुर्या आनीयं न न
 कानयं ॥ ॥ थडादरु थमनं लिकाडा थमंदयका थमंदरु कृत्पनीहया अननकसतयहिता ॥ २१ ॥ वाक
 गः साधियं वेधुदकुदीदरु कस्तथा ॥ अमकुमकुवादी च आनीयं न न कालयं ॥
 वाकनननामान थकृत्पनीहया अननकसतयहिता ॥ २२ ॥

स्वया अशुभाक थपनीहया अननकसतयहिता ॥ २२ ॥ ॥ इत उवाच ॥ अस्माकं वलवर्त
 च धन्या लं विनंदन ॥ गृहवास्तुपिका न च कृत्पनीहया अननकसतयहिता ॥ २३ ॥ ॥
 विपनि वाक थपनीहया अननकसतयहिता ॥ २४ ॥ ॥
 ॥ वेवसत उवाच ॥ मृककृति याना ली विदिता कलह प्रिय ॥ मरु क संवनं सत्ता
 तज विग्राम इतया ॥ ॥ मिताजनया सुरुतया अथा यस्तनियं कनहयाय
 उथा यस्तं मालस्वानमदकपालसंवननमसंशुता यस्तं थगुलिथयसं
 कपनिवास्तया ॥ २४ ॥ ॥
 ॥ मरु क संवनं सत्ता तज विग्राम इतया ॥ ॥ तया कुरु सन अथा सतिनन अ ॥ अतनन प्रदाशु

20

15

10

5

0

cm.

5

10

15

20

25

30



अथ वदितुं शक्यम् ॥ ३

... ۱۳۵۷

मिसस्यनभासराजपुगा ४१३४

सप्तमं गणपतिपूजां श्रीकृष्णकोत्वा सतिराष्टिकां ~~सप्त~~

1724

सि. २५५

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

3

३६



20

मदा क १५॥ धा १५॥ मका क पीही

मसक वा वा धहा रा र सी घ वा व सा रा म लका श्री ४५११२ ॥॥३१

मसक क १५॥ धा १५॥ मका क पीही

यकागज लव

धो गो शय नमो वा क म पु व

कन गोर पोसा

सूय स्य प वा क वि ह दू ग ध ग म क क म म वा य

य का दि न य क

समि १५॥ धा १५॥ मका क पीही

ता ला द भ्रा दि

वि का र त तार वा ह न ले पा या की त पो सा सा व त यो

ह र तो ला य वा

15

10

मसक वा वा धहा रा र सी घ वा व सा रा म लका श्री ४५११२ ॥॥३१

मसक क १५॥ धा १५॥ मका क पीही

मेष १ वष २ मि पु ३ कत कत सिंह ५ क म्या ६ तुला ७ विदु ८ धनु ९

मक १० क म ११ मी १२

हाहा मा क

दुगा

दहा वि

द म भा भि नि १

ज ले रा हि मी ४

य मे भ र रा २

म गे म गे स ला ५

अ गे क ति का ३

दे रे ६

मा ह नु

सूर्योपपत्तौ पके रवि १२ १४ भूपो १६ छात्रो १९ नवि १९ कृष्ण २१ जिना २४ च

सप्तमि २७ मन्त्र ३० गुण ३१ रसा ३६ स्वातिनी गिरिराज १६३३।५९ २०५९

भीमोशासानो ११ वेदां धरते जगती वहते भूमा नक्षत्र वेदोत्पद्यते वली हन
वयते म १॥२ खारवा वेदमि कृष्ण ३॥३ काम

कृष्ण १५४
स्वातिनी गिरिराज कृष्ण मानि नाना योत्सा १॥३१॥५९५५

वेदोत्पद्यते २॥३१॥५९५५

एषा कृष्ण कृष्ण माके मोहा रूपे जा को सिपाहि दाजा माके एक दाला आप

हो ३०१ पि स्यान्नि सुवे के दा । दा को तापा गादि

स्वातिनी सिपाहि का कामा दामा जामा ही हि के माहा देव के ३५१

सप्तमि ३० गुण ३१ रसा ३६ स्वातिनी गिरिराज १६३३।५९ २०५९

एषा कृष्ण कृष्ण

३५

उय दुग्गाचार

सिद्धि मुक्ता कला
दुर्गा देवी का
स्वा
स्वस्ति मित्राथ क

२२ तम

स्व/ स्वस्तिनिनाथ कपूजी राजदुर्ग कपूजी लाल

१-१-

सूत्रममत्क... मिश्र... नार... निमा...

२४४ खि तासोरवा ॥ १५ ॥ सुकुलां व द्वां व साखार

कात्तिके पक्ष अष्टमि तिथि शुक्ल कृष्ण
पञ्चमी तिथि शुक्ल कृष्ण

Handwritten text in Devanagari script, likely a continuation of the previous page, showing the end of a line and the beginning of another.

ना ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

विष्णु २॥

1717